अन्नप्राशन-संस्कार

सम्पादक
प्रो. राममूर्ति शर्मा

लेखक
डॉ. कुञ्जबिहारी शर्मा

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

संस्कार-ग्रन्थमाला
[पञ्चम पुष्प]

अन्नप्राशन-संस्कार

[पूजा-विधि-सहित]

सम्पादक

प्रो. राममूर्ति शर्मा

कुलपति

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

वाराणसी

लेखक

डॉ. कुञ्जबिहारी शर्मा

उपाचार्य, वेद-विभाग

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

वाराणसी

वाराणसी

२०५८ वैक्रमाब्द १९२३ शकाब्द २००१ खैस्ताब्द

अनुसन्धान - प्रकाशन - पर्यवेक्षक —
निदेशक, अनुसन्धान-संस्थान
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी।

ISBN : 81-7270-062-8

❐

प्रकाशक—
डॉ. हरिश्चन्द्र मणि त्रिपाठी
निदेशक, प्रकाशन-संस्थान
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी-२२१००२

❐

प्राप्ति-स्थान —
विक्रय-विभाग,
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी-२२१००२

❐

प्रथम संस्करण – १००० प्रतियाँ

पञ्चम पुष्प की एक प्रति का **मूल्य** – ३२.०० रूपये (पेपरबैक में)

संस्कार-ग्रन्थमाला के प्रथम पुष्प से दशम पुष्प तक के पूरे सेट का **मूल्य** – ३००.०० रूपये (पेपरबैक में)

❐

मुद्रक —
श्रीजी कम्प्यूटर प्रिण्टर्स
नाटी इमली, वाराणसी-२२१००१

पुरोवाक्

कर्मकाण्ड भारतीय जीवन का प्रधान अङ्ग है। कर्मकाण्ड के अन्तर्गत भी गर्भाधान आदि संस्कार मानव के आद्योपान्त निर्माण एवं उसकी सद्गति के साधक हैं। भारतवर्ष में ग्रामों से लेकर महानगरों तक ये संस्कार सम्पन्न होते देखे जाते हैं; किन्तु प्रायः यह दृष्टिगत होता है, कि ग्रामों में ही क्या नगरों में भी, प्रायः ये संस्कार सम्यक् रूप से सम्पन्न नहीं होते। स्वभावतः, ग्रामों की स्थिति, नगरों की अपेक्षा, इस सम्बन्ध में अधिक शोचनीय है। इसका कारण यही है, कि ग्रामों में सम्यगधीत कर्मकाण्डी विद्वान् नहीं उपलब्ध हो पाते। इसका परिणाम यह होता है, कि कभी-कभी अधीत यजमान की कर्मकाण्ड एवं तथाकथित कर्मकाण्डी में अनास्था, अश्रद्धा हो जाती है। हमारे माननीय उच्च-शिक्षा मन्त्री **श्री ओमप्रकाश सिंह जी** ने जो उच्च-शिक्षा के क्षेत्र में अपेक्षित परिवर्तन एवं परिष्कार के लिए कटिबद्ध हैं तथा अपने प्रयत्नों में पूर्णतया सफल हुए हैं, हमारा ध्यान कर्मकाण्डगत उक्त समस्या की ओर आकृष्ट कराते हुए, भारतीय संस्कारों की ऐसी लघु एवं सरल पुस्तिकाओं की रचना का परामर्श दिया, जिनके द्वारा सामान्य पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी संस्कारों को सम्पन्न कर सके। इस कार्य को सम्पन्न करने में, मुझे अपने अध्यापकों से पूर्ण सहयोग मिला है। एतदर्थ मैं अपने इन साथियों, प्रो. युगलकिशोर मिश्र, डॉ. कुञ्जबिहारी शर्मा, डॉ. राममूर्ति चतुर्वेदी, डॉ. महेन्द्र पाण्डेय, डॉ. कमलाकान्त त्रिपाठी, डॉ. पतञ्जलि मिश्र एवं डॉ. जयप्रकाश पाण्डेय को साधुवाद देता हूँ, तथा आशा करता हूँ,

कि इन लघु पुस्तिकाओं से संस्कारों के सम्पन्न करने-कराने में सुगमता होगी, तथा लोगों की कर्मकाण्ड में श्रद्धा-आस्था की वृद्धि होगी।

प्रस्तुत कार्य को सम्पन्न करने में, निदेशक, प्रकाशन-संस्थान, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, डॉ. हरिश्चन्द्र मणि त्रिपाठी का सहयोग भी स्तुत्य है, जिन्होंने यथासमय एवं यथापेक्षित रूप में संस्कारसम्बन्धी इन लघु पुस्तिकाओं का प्रकाशन सम्पन्न किया है। अथ च इन ग्रन्थों के मुद्रक श्री अनूप कुमार नागर, सञ्चालक श्रीजी कम्प्यूटर्स भी प्रशंसा के भाजन हैं, जो सदैव हमारे मुद्रण कार्य को निष्ठा एवं तत्परता के साथ सम्पन्न करते हैं।

रामभूर्ति शर्मा

वाराणसी
मातृनवमी,
वि. सं. २०५८

राममूर्ति शर्मा
कुलपति
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

प्रकाशकीय

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की प्रकाशन-ग्रन्थमालाओं ने प्राच्य भारतीय विद्याओं की प्रायः समस्त शाखाओं को अभिव्याप्त किया है। इस विश्वविद्यालय के द्वारा माननीय कुलपति **प्रो. राममूर्ति शर्मा जी** की प्रेरणा से एक नयी ग्रन्थमाला **'संस्कार-ग्रन्थमाला'** का प्रवर्तन हुआ है। इस संस्कार-ग्रन्थमाला में हिन्दू-संस्कारों से सम्बन्धित निम्नलिखित दस पुस्तकें सम्प्रति प्रकाशित हो रही हैं—

१.	शिलान्यास एवं वास्तुपूजन-पद्धति	प्रो. युगलकिशोर मिश्र
२.	गर्भाधान-पुंसवन-सीमन्तोन्नयन-संस्कार	डॉ. कमलाकान्त त्रिपाठी
३.	जातकर्म-संस्कार	डॉ. जयप्रकाश पाण्डेय
४.	नामकरण-संस्कार	डॉ. कुञ्जबिहारी शर्मा
५.	अन्नप्राशन-संस्कार	डॉ. कुञ्जबिहारी शर्मा
६.	चूडाकरण-संस्कार	डॉ. महेन्द्र पाण्डेय
७.	कर्णवेध-संस्कार	डॉ. महेन्द्र पाण्डेय
८.	यज्ञोपवीत-वेदारम्भ-समावर्तन-संस्कार	डॉ. राममूर्ति चतुर्वेदी
९.	केशान्त-संस्कार	डॉ. महेन्द्र पाण्डेय
१०.	विवाह-संस्कार	डॉ. पतञ्जलि मिश्र

संस्कारों के विषय में गृह्यसूत्रों, धर्मसूत्रों, मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य-स्मृति तथा अन्य स्मृतियों में सामग्रियाँ पुष्कल मात्रा में उपलब्ध हैं। साथ ही रघुनन्दन के संस्कारतत्त्व, नीलकण्ठ के संस्कारमयूख, मित्रमिश्र के संस्कारप्रकाश, अनन्तदेव के संस्कार-कौस्तुभ एवं गोपीनाथ के संस्काररत्नमाला नामक निबन्ध-ग्रन्थों में भी प्रचुर मात्रा में सामग्री भरी पड़ी है। स्मृतिकारों में संस्कारों की संख्या पर भी पर्याप्त मतभेद है। महर्षि गौतम के मत से चालीस संस्कार होते हैं। महर्षि अङ्गिरा ने पच्चीस संस्कारों की बात कही है। व्यास-स्मृति में सोलह संस्कार गिनाये गये हैं। यथा—

गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तो जातकर्म च।
नामक्रियानिष्क्रमणान्नप्राशनं वपनक्रिया॥

कर्णवेधो व्रतादेशो वेदारम्भक्रियाविधिः ।
केशान्तः स्नानमुद्वाहो विवाहाग्निपरिग्रहः ॥
त्रेताग्निसङ्ग्रहश्चेति संस्काराः षोडश स्मृताः ॥

लोक में प्रायः ये ही सोलह संस्कार प्रचलित हैं। इन्हीं सोलह संस्कारों से कल्याण-परम्पराओं का भोक्ता मानव शरीर ब्रह्मत्वप्राप्ति की अर्हता प्राप्त करता है। भगवान् मनु ने इस तथ्य को निम्नलिखित श्लोक में प्रतिपादित किया है—

स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः ।
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः ॥

स्थान एवं काल-भेद से विश्व स्तर पर संस्कार-भेद परिलक्षित होते हैं। वस्तुतः संस्कारों की परिधि में मानवमात्र परिवेष्टित है। मानव मन एवं शरीर पर संस्कारों का प्रभाव बहु-आयामी होता है। भारतीय संस्कार मनुष्य को पवित्र तो करते ही हैं, साथ ही उसे विभूषित भी करते हैं। इस तथ्य का उन्मीलन महाकवि कालिदास ने कुमारसम्भव महाकाव्य में बड़े मार्मिक शब्दों में किया है—

प्रभामहत्या शिखयेव दीपः
त्रिमार्गयेव त्रिदिवस्य मार्गः।
संस्कारवत्येव गिरा मनीषी
तया स पूतश्च विभूषितश्च ॥ (कुमा. १।२८)

अर्थात् जिस प्रकार प्रभा की स्निग्धता एवं देदीप्यमान आलोक से दीपशिखा पवित्र और विभूषित होती है, स्वर्गङ्गा से जिस प्रकार स्वर्गलोक पवित्र एवं विभूषित होता है, जिस प्रकार संस्कार वाली वाणी से मनीषी व्यक्ति पवित्र एवं विभूषित होता है, उसी प्रकार कन्या पार्वती से उनके पिता हिमालय पवित्र एवं विभूषित हुए।

१७ जुलाई, १९९९ की तिथि हठात् स्मृति-पटल पर आवृत हो रही है, जब हम लोग माननीय कुलपति **प्रो. राममूर्ति शर्मा जी** के नेतृत्व में भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम **डॉ. कृष्णकान्त जी** के उपराष्ट्रपति-

भवन पर उन्हें विश्वविद्यालय के कतिपय महनीय प्रकाशनों को उपहार-स्वरूप प्रदान करने के लिए पहुँचे थे। हमारे माननीय कुलपति **प्रो. राममूर्ति शर्मा जी** ने विश्वविद्यालय के महनीय प्रकाशनों को महामहिम उपराष्ट्रपति जी के करकमलों में उपहृत करते हुए उन ग्रन्थों की विशेषताएँ निरूपित की थीं। महामहिम ने उपहारस्वरूप प्राप्त पुस्तकों को सहर्ष अङ्गीकार करते हुए कुलपति प्रो. राममूर्ति शर्मा जी से आग्रह किया था कि आपके प्रकाशनों को देखकर मैं अत्यन्त हर्षित हुआ हूँ और आप से एक विशेष आग्रह कर रहा हूँ कि भारतीय संस्कारों से सम्बन्धित पुस्तकों के प्रकाशन की ओर आपका विशेष ध्यान जाना चाहिए। महामहिम उपराष्ट्रपति जी की सदिच्छा की अनुगूँज २० अप्रैल, २००१ के दीक्षान्त-महोत्सव के अवसर पर उत्तर-प्रदेश के उच्च-शिक्षा-मन्त्री **डॉ. ओम प्रकाश सिंह जी** के दीक्षान्त भाषण में प्रतिध्वनित हुई। डॉ. सिंह जी ने हिन्दू-संस्कारों के अनुष्ठान में दिनानुदिन हो रहे ह्रास की ओर विद्वानों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए यह आह्वान किया था कि भारतीय-समाज अपने संस्कारों के अनुष्ठान के बल पर सहस्राब्दियों से शक्ति, स्फूर्ति एवं जीवन में नावीन्य प्राप्त करता रहा है और हमारे संस्कार हमारे जीवन में **'नवो नवो भवति जायमानः'** का सन्देश देते हुए राष्ट्रीय एकता की भी प्रबल कड़ी रहे हैं। अतः मैं सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के विद्वानों से प्रबल आग्रह कर रहा हूँ कि सामाजिक जीवन में नवनवोन्मेष का आधान करने वाले हिन्दू-संस्कारों की शुद्धता, पवित्रता तथा लोक-कल्याण की भावना को अक्षुण्ण रखने का हर सम्भव प्रयास किया जाय।

इस प्रकार महामहिम उपराष्ट्रपति जी एवं माननीय उत्तर-प्रदेश के उच्च-शिक्षा-मन्त्री जी के उद्‌बोधनों को साकार करने के लिए विश्वविद्यालय के मनीषी कुलपति **प्रो. राममूर्ति शर्मा** जी ने अभियान चलाकर पारङ्गत धर्मशास्त्रीय विद्वानों के द्वारा विभिन्न हिन्दू-संस्कारों पर पुस्तकें लिखवायीं और उनके शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशन हेतु निरन्तर प्रेरणा देते रहे। फलस्वरूप सम्प्रति हिन्दू-संस्कारों से सम्बन्धित दस पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं; जिनमें तेरह संस्कार समाविष्ट हैं।

अतः मैं यहाँ हिन्दू-संस्कारों की शुद्धता, शुचिता एवं पवित्रता के प्रति सतत जागरूक भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम **डॉ. कृष्णकान्त जी**

एवं उत्तर-प्रदेश के माननीय उच्च-शिक्षा-मन्त्री **डॉ. ओम प्रकाश सिंह जी** के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने इस महनीय सांस्कारिक-कार्य के लिए प्रेरणा-स्रोत की भूमिका निभायी है। वस्तुतः स्वल्पातिस्वल्प समय में हिन्दू-संस्कारों की दस पुस्तकों का प्रकाशन हमारे मनीषी कुलपति **प्रो. राममूर्ति शर्मा जी** की प्रेरणा, अध्यवसाय एवं नित्योत्साह प्रदान करने से सम्भव हो सका है। अतः मैं यहाँ मनीषी कुलपति **प्रो. राममूर्ति शर्मा जी** के प्रति हार्दिक कृतज्ञता एवं प्रणाम निवेदित करता हूँ।

यहाँ मैं विभिन्न हिन्दू-संस्कारों पर स्वल्प समय में आधिकारिक ग्रन्थ लिखने वाले मनीषी विद्वानों के प्रति शिरसा आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने माननीय कुलपति महोदय की प्रेरणा से इन ग्रन्थों का लेखन सम्पन्न किया है।

इस अनुष्ठान में लगे हुए प्रकाशन-संस्थान के ईक्ष्यशोधनप्रवीण **डॉ. हरिवंश कुमार पाण्डेय,** सहायक सम्पादक **डॉ. ददन उपाध्याय,** ईक्ष्यशोधक **श्री अशोक कुमार शुक्ल, श्री अतुल कुमार भाटिया,** प्रकाशन सहायक **श्री कन्हई सिंह कुशवाहा** तथा **श्री ओम प्रकाश वर्मा** को भूरिशः धन्यवाद प्रदान करता हूँ, जिन्होंने रात्रिंदिवं इस कार्य की सम्पन्नता में अपना सहयोग प्रदान किया है। इन पुस्तकों के मुद्रक **श्री अनूप कुमार नागर** को हार्दिक धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने इन पुस्तकों को निर्धारित समय में मुद्रित करने में अपनी बहुज्ञता, तत्परता तथा कौशल दिखाया है।

भारतीय समाज को सहस्राब्दियों से संस्कारित करने वाले संस्कारों की इन पुस्तकों को सान्नपूर्णा भगवान् श्री विश्वेश्वर के कर-कमलों में समर्पित करता हूँ।

विद्वत्कृपाकांक्षी

हरिश्चन्द्र मणि त्रिपाठी
निदेशक, प्रकाशन-संस्थान
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

वाराणसी
भाद्रशुक्ल-द्वादशी (वामन-द्वादशी)
२०५८ वि. संवत्

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृ.सं.
मंगलाचरण	१
संस्कार के प्रकार एवं प्रयोजन	१-२
अन्नप्राशन-संस्कार एवं प्रयोजन	२
अन्नप्राशन का समय व मुहूर्त	२-३
प्रायश्चित्त गोदान-संकल्प	३
पवित्रकरण	३
स्वस्ति-वाचन	४-६
संकल्प	६-७
गणेशाम्बिका-पूजन	७-१८
कलश-स्थापन	१९-२२
पुण्याह-वाचन	२२-२५
षोडश-मातृका-पूजन	२६-२७
सप्तघृतमातृका-पूजन	२७-२८
आयुष्य-मन्त्रजप	२८-२९
सांकल्पिक नान्दीश्राद्ध-प्रयोग	२९-३३
पंचभूसंस्काराग्निस्थापन	३३
चरुपाक	३३-३४
ब्रह्मवरण	३४
कुशकण्डिका	३४-३५

आघाराज्यभागसंज्ञक होम	३५-३६
भूरादि नवाहुति	३६
संस्रव-प्राशन	३६
ब्रह्मा को पूर्णपात्रदान	३७
ब्राह्मण-भोजन-संकल्प	३८
भूयसी-दक्षिणा-संकल्प	३८
विसर्जन	३८
पूजन-सामग्री	३९
पारिभाषिक-शब्दार्थ-सूची	४०-४२

●

अन्नप्राशन-संस्कार

मङ्गलाचरण

'ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्य्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः'॥

यस्य भृङ्गावलिः कण्ठे स्तुतदानाम्बुपूरिते।
भाति रुद्राक्षमालेव स वः पायाद् गणाधिपः॥

संस्कार के प्रकार एवं प्रयोजन

संस्कार शब्द सम् पूर्वक कृ धातु से घञ् प्रत्यय करके बनता है, जिसका अर्थ होता है पूर्णतः संस्कृत करना, शुद्ध करना, पवित्र करना। रक्त, मांस से निर्मित शरीर का भी संस्कार द्वारा पवित्रीकरण होता है। 'संस्क्रियतेऽनेन श्रौतकर्मणा स्मार्तकर्मणा वा'। वेद सभी विद्याओं का मूल है, उसी प्रकार गर्भाधानादि से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त सब संस्कारों का मूल है। मनु ने कहा है—'संस्कारार्थं शरीरस्य' (२.६६)। मनु ने बारह संस्कारों का उल्लेख किया है। संस्कार से अन्तःकरण की शुद्धि होती है। मनु ने कहा है—

वैदिकैः कर्मभिः पुण्यैर्निषेकादिर्द्विजन्मनाम्।
कार्यः शरीरसंस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च॥

अर्थात् गर्भाधानादि संस्कारों से शरीर पवित्रता को प्राप्त होता है। संस्कार दो प्रकार के कहे गये हैं—१. ब्राह्मसंस्कार, २. दैवसंस्कार। गर्भाधानादि संस्कार ब्राह्मसंस्कार हैं। पाकयज्ञ, हविर्यज्ञादि दैव संस्कार हैं। इस प्रकार गौतमादि ऋषियों ने अड़तालीस संस्कारों को कहा है; पर मुख्य रूप से सोलह संस्कारों को कहा है, जिनका क्रम इस प्रकार है—१. गर्भाधान, २. पुंसवन, ३. सीमन्तोन्नयन, ४. जातकर्म, ५. नामकरण, ६. निष्क्रमण, ७. अन्नप्राशन, ८. चूड़ाकर्म,

९. कर्णवेध, १०. विद्यारम्भ, ११. उपनयन, १२. केशान्त, १३. वेदारम्भ, १४. समावर्तन, १५. विवाह, १६. अन्त्येष्टि।

इन संस्कारों का निश्चित समय एवं शुभ मुहूर्त में वैदिक एवं स्मार्त कर्मों के द्वारा करना अत्यन्त अनिवार्य है। इससे दीर्घायु-प्राप्ति, बुद्धि, विद्या, तेज एवं शक्ति की वृद्धि होती है।

अन्नप्राशन-संस्कार एवं प्रयोजन

यह संस्कार बालक को तेजस्वी बनाता है। कहा भी गया है—'घृतौदनं तेजस्काम:'[१], अर्थात् जिस बालक को तेजस्वी बनाना हो, उसे प्राशनकाल में घृतयुक्त भात खिलावें, और भी कहा है—**'दधिमधुघृत-मिश्रितमन्नं प्राशयेत्'**। दही, शहद और घृत तीनों भात के साथ खिलाकर अन्नप्राशन करे। आयुर्वेद में चावल के गुण हैं—बलकारक, त्रिदोषनाशक, नेत्र-हितकारक और मूत्र-नियंत्रक। बालक के दाँत छठें महीने में निकलने लगते हैं तथा अन्नप्राशन का भी समय जन्म से छठें महीने में ही है। वैद्यशिरोमणि सुश्रुत के अनुसार 'षण्मासं चैनमन्नं प्राशयेल्लघु हितं च'[२], अर्थात् छठवें महीने में बालक को थोड़ा और हितकर अन्न खिलाना चाहिए। इससे बालक स्वस्थ और दीर्घजीवी होता है। इस प्रकार अन्नप्राशन में बालक की उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए पारस्करगृह्यसूत्र के अनुसार विभिन्न प्रकार के प्राशन के विधान बतलाये गये हैं[३]!

अन्नप्राशन का समय व मुहूर्त

यह जन्म के छठें मास में होता है[४]। बालकों का अन्नप्राशन सम ६,८,१०,१२ मासों में और कन्याओं का विषम ५,७,९,११ मास[५] में होता है।

---

१. आश्वलायनगृह्यसूत्र, १.१६.१,४,५।
२. सुश्रुत, १०.४९।
३. पा.गृ.सू., १.१९।
४. पा.गृ.सू., १.१९ 'षष्ठे मासेऽन्नप्राशनम्'।
५. मुहूर्तचिन्तामणि, संस्कार-प्रकरण।

नक्षत्र—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, अभि., तीनों उत्तरा एवं रेवती।

तिथि—द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी, सप्तमी, दशमी, त्रयोदशी एवं पूर्णिमा।

दिन—सोमवार, बुधवार, गुरुवार एवं शुक्रवार।

त्याज्य तिथि—रिक्ता तिथि (४।१४।९), नन्दा तिथि (१.६.११), अष्टमी, अमावास्या, द्वादशी, तिथिक्षय।

विशेष—ताम्बूल भक्षण भी बालक का ढाई मास पर अथवा अन्नप्राशन के समय रखना चाहिए।

नारदस्मृति के आधार पर अन्नप्रशान ८वें, ९वें, १०वें मास में भी होता है।

प्रायश्चित्त-सङ्कल्पः

दोषनिवारणार्थ सङ्कल्प करें—गर्भाधानादिसंस्काराणां लोपे सति प्रायश्चित्तं कुर्यात्। तद्यथा—प्रतिसंस्कारे पादकृच्छ्रम् एकां गां वा दद्यात्। तत्र सङ्कल्पः—आचार्य आचम्य, प्राणानायम्य, दक्षिणहस्ते जलमादाय, देशकालौ सङ्कीर्त्य **अमुकगोत्रः अमुकशर्मा मम अस्य कुमारस्य (अनयोः कुमारयोः, एषां कुमाराणां वा) अन्नप्राशनसंस्कार-कर्मलोपनिमित्तं प्रायश्चित्तं यथासङ्ख्याकं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतं यथा-यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे**। इत्युक्त्वा भूमौ जलं क्षिपेत्।

ततः कुमारपिता शुभासने प्राङ्मुखोपविश्य, माता कुमारमङ्कमादाय, पत्युर्दक्षिणत उपविशेत्। कर्ता—'**ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः**' इति त्रिराचम्य, प्राणानायम्य—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः'॥

इत्यात्मानं पूजासामग्रीं च सम्प्रोक्ष्येत्।

कर्ता दक्षिणहस्ते अक्षत-पुष्पाणि गृहीत्वा, 'ॐ आ नो भद्रादीन्' मङ्गलमन्त्रान्, 'सुमुखश्चैकदन्तश्चे'त्यादि-मङ्गलश्लोकांश्च पठेत्। तद्यथा—स्वस्त्ययनम्।

स्वस्ति-मङ्गल-पाठः

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।१।।

देवानां भद्द्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाꣳ रातिरभि नो निवर्तताम्।
देवानाꣳ सख्यमुपसेदिमा व्वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।२।।

तान् पूर्व्वया निविदा हूमहे व्वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम्।
अर्यमणं वरुणꣳ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।।३।।

तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्णया युवम्।।४।।

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।५।।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।६।।

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निर्जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह।।७।।

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।८।।

शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।९।।

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वेदेवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।।१०।।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।।११।।

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।१२।।

ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥१॥

वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटिसूर्यसमप्रभ!।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥२॥

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥३॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥४॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥५॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥६॥

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥७॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके!।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि! नमोऽस्तु ते॥८॥

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः॥९॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥१०॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥११॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥१२॥

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥१३॥

स्मृतेः सकलकल्याणभाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥१४॥

सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः॥१५॥

प्रधान सङ्कल्प

ततो जलाऽक्षतद्रव्याण्यादाय सङ्कल्पं कुर्यात्। देशकालौ सङ्कीर्त्य।

यजमान हाथ में अक्षत, सुपाड़ी, पुष्प, जल लेकर पुनः सङ्कल्प करे, आचार्य बोले—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे

वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तके देशान्तर्गते अविमुक्त-वाराणसीक्षेत्रे (अमुकक्षेत्रे) अमुकनद्या: अमुकदिग्भागे अमुकनामसंवत्सरे अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुकनामके करणे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीचन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा-राशिस्थानेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्र: अमुकशर्मा सपत्नीकोऽहं ममास्य शिशोर्मातृगर्भमलप्राशनैनोनिबर्हणबीज-गर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणान्नाद्यब्रह्मवर्चसतेज-इन्द्रियायुरभिवृद्धिद्वारा श्री-परमेश्वरप्रीत्यर्थम् अन्नप्राशनाख्यं कर्म करिष्ये। तदङ्गत्वेन स्वस्ति-पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्धारापूजनमायुष्यमन्त्रजपं साङ्कल्पिकेन विधिनाभ्युदयिकनान्दीश्राद्धं च करिष्ये।

पुनर्जलं गृहीत्वा, तत्राऽऽदौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयो: पूजनमहं करिष्ये।

(इसके बाद गणपति-पूजन से प्रारम्भ कर नान्दीश्राद्ध तक कर्म करे)।

ततो गणपतिपूजनादि-नान्दीश्राद्धान्तं कर्म कुर्यात्।

गणेशाम्बिका-पूजनम्

गणपत्यावाहनम्

गणेश तथा गौरी का आवाहन करे।

ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।।

एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं ध्यायेत् सिद्धिविनायकम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: गणपतये नम: गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

गौर्यावाहनम्

ॐ अम्बेऽम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन।
ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील्यवासिनीम्।।
हेमाद्रितनयां देवीं वरदां भैरवप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा

निम्न मन्त्र से स्पर्श करते हुए प्राण प्रतिष्ठा करें।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमं दधातु। विश्वेदेवासऽ इह मादयन्तामोँ३ प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

आसनम्

आसन के लिए अक्षत छोड़ें।

ॐ पुरुषऽ एवेदं सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।
विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।
स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजित।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्

पाद्य अर्पित करें।

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।
सर्वतीर्थसमुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।
विघ्नराज गृहाणेदं भगवन् भक्तवत्सल।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

अर्घ्य के लिए चन्दन, पुष्प, अक्षत एवं फल से मिश्रित जल अर्पित करें।

ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो व्विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि।।
गणाध्यक्ष नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणाकर।
अर्घ्यं च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्

आचमन के लिए जल अर्पित करें।

ॐ ततो व्विराडजायत व्विराजोऽअधिपूरुषः।
स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।
विनायक नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित।
गङ्गोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि।

स्नानम्

जल से स्नान करायें।

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।
पशूंस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये।।
मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पञ्चामृतम्

पञ्चामृत से स्नान करायें।

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्

शुद्ध जल से स्नान करायें।

ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विना। श्वेतः श्वेताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।

गङ्गा-सरस्वती-रेवा-पयोष्णी-नर्मदा-जलैः।
स्नापितोऽसि मया देव तथा शान्तिं कुरुष्व मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। गङ्गोदकेन स्नानं तीर्थोदकेन स्नानं समर्पयामि।

वस्त्रम्

अलङ्करण के लिए वस्त्र चढ़ायें।

ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगात्स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्

अलङ्करण के लिए उपवस्त्र चढ़ायें।

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्मवरूथमासदत्स्वः।
व्वासोऽअग्ने व्विश्वरूपष्टसंव्ययस्व व्विभावसो।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः उपवस्त्रं समर्पयामि, तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

यज्ञोपवीत चढ़ायें।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि, तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

गन्धम्

चन्दन या रोली चढ़ायें।

ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः गन्धं समर्पयामि।

अक्षतान्

अक्षत चढ़ायें।

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो व्विप्रानविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालाम्

पुष्पमाला चढ़ायें।

ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वाऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि।

दूर्वाङ्कुरान्

दूर्वा चढ़ायें।

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

सिन्दूरम्

सौभाग्य के लिए सिन्दूर चढ़ायें।

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वनेशूघनासो व्वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धाराऽअरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः।।

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्याणि

अबीरादि चूर्ण चढ़ायें।

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो व्विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान्पुमाꣳसम्परिपातु विश्वतः।।

नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धितद्रव्यम्

इत्र चढ़ायें।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धना-न्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

चन्दनागरुकर्पूरैः संयुतं कुङ्कुमं तथा।
कस्तूर्यादिसुगन्धांश्च सर्वाङ्गेषु विलेपनम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

नैवेद्यं पुरतो निधाय (सामने नैवेद्य स्थापित करके)।

धूपम्

धूप अर्पित करें।

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्वतं योऽस्मान्धूर्वति तं धूर्व्वयं वयं धूर्व्वामः। देवानामसि व्वह्नितमं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः धूपमाघ्रापयामि।

दीपम्

दीप दिखायें।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा। सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्निर्व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा। सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा।।

आज्यं च वर्त्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दीपं दर्शयामि। ततो हस्तप्रक्षालनम्।

नैवेद्यम्

नैवेद्य अर्पित करें।

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ3 अकल्पयन्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्।।
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यं निवेदयामि। तदन्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। मध्ये पानीयम्, उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्तनम्

दोनों अनामिका अंगुलियों से चन्दन चढ़ायें।

ॐ अꣳ शुनाते अꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलम्

लवङ्ग, इलायची आदि ऋतुफल चढ़ायें।

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
व्वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ऋतुफलं समर्पयामि।

ताम्बूलम्

एला, लवङ्ग सहित अखण्ड ताम्बूल चढ़ायें।

ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳ हसः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मुखवासार्थे पूगीफलं ताम्बूलमेलालवङ्गादिकं समर्पयामि।

दक्षिणा

द्रव्य चढ़ायें।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनम्

कर्पूर की आरती करें।

ॐ आरात्रिपार्थिवꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः
दिवः सदाꣳसि बृहती व्वितिष्ठ सऽआ त्वेषं वर्त्तते तमः।।

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिः

हाथ में फूल लेकर पुष्पाञ्जलि दें।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्ता गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा

प्रदक्षिणा करें।

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषां सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।

विशेषार्घ्यम्

ताम्रपात्र में जल-अक्षत-चन्दनादि लेकर विशेषार्घ्य दें।

जलगन्धाक्षतफलपुष्पदूर्वादक्षिणाः ताम्रपात्रे प्रक्षिप्य अवनिकृत-जानुमण्डलः अर्घपात्रमञ्जलिना गृहीत्वा श्लोकान् पठेत्—

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्तानामभयङ्कर्ता त्राता भवभवार्णवात्।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुरग्रज प्रभो।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।।
अनेन सफलार्घ्येण सफलोऽस्तु सदा मम।।

ॐ रूपं देहि जयं देहि सौभाग्यं देहि देवि मे।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना करें तथा अन्त में जल छोड़ें।

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥१॥

त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति
भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति
तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव॥२॥

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जां
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥३॥

त्वं वैष्णवीशक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः॥४॥

गणेशपूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम॥५॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रार्थनानमस्कारांश्च समर्पयामि।

हाथ में जल लेकर **अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम।** (यह बोलते हुए जल छोड़े)।

अथ कलशस्थापनम्

कलश स्थापित करने के लिए—

भूमिस्पर्शः

मन्त्र पढ़ते हुए भूमि स्पर्श करें।

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री।
पृथ्वीं यच्छ पृथिवीं दृꣳह पृथिवीमाहिꣳ सीः।।

इति मन्त्रेण भूमिस्पर्शः।

धान्यम्

सप्तधान्य या यव छोड़ें।

धान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनाम्पयोऽसि।।

इति मन्त्रेण सप्तधान्यं विकिरेत्।

कलशस्थापनम्

सप्तधान्य के ऊपर कलश स्थापन करें।

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः।।

धान्योपरि कलशं संस्थापयेत्।

कलशे जलप्रपूरणम्

कलश में जल छोड़ें।

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्य ऋतसदन्यसि व्वरुणस्य ऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऋतसदनमासीत्।।

कलशे जलं प्रपूरयेत्।

गन्धम्

गन्ध छोड़ें।

ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनंस्त्व्वामिन्द्रस्त्वाँ बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।।

कलशे गन्धं प्रक्षिपेत्।

सर्वौषधिः

सर्वोषधि छोड़ें।

ॐ या औषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगम्पुरा।
मनैनु बभ्रूणामहꣳशतं धामानि सप्त च।।

कलशे सर्वौषधिं प्रक्षिपेत्।

दूर्वा

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

कलशे दूर्वाङ्कुरान् प्रक्षिपेत्।

पञ्चपल्लवः

पञ्चपल्लव छोड़ें।

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।

कलशे पञ्चपल्लवान् प्रक्षिपेत्।

पूगीफलम्

कलश में सुपाड़ी छोड़ें।

याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः।।

अनेन कलशे पूगीफलं निक्षिपेत्।

सप्तमृत्तिका

सप्तमृत्तिका छोड़ें।

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः।।

कलशे सप्तमृत्तिकां निक्षिपेत्।

द्रव्यम्

द्रव्य छोड़ें।

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

कलशे द्रव्यं प्रक्षिपेत्।

पञ्चरत्नम्

कलशे में पञ्चरत्न छोड़ें।

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।।

कलशे पञ्चरत्नानि प्रक्षिपेत्।

वस्त्रम्

कलश में वस्त्र परिवेष्टित करें।

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्मवरुथ मा सदत्स्वः।
व्वासोऽअग्ने विश्वरूपꣳ संव्ययस्व व्विभावसो।।

कलशे वस्त्रमाच्छादयेत्।

पूर्णपात्रम्

कलश के ऊपर पूर्णपात्र रखें।

ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेव व्विक्रीडावहा इषमूर्जꣳशतक्रतोः।।

कलशोपरि पूर्णपात्रं स्थापयेत्।

नारिकेलफलम्

पूर्णपात्र के ऊपर नारियल रखें।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।।

कलशस्य पूर्णपात्रोपरि नारिकेलं स्थापयेत्।

वरुणस्यावाहनम्

वरुण का आवाहन करें।

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुशꣳसमान आयुः प्रमोषीः।।

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि।

षोडशोपचारेण सम्पूज्य।

इसके बाद षोडशोपचार से पूजन करें।

प्रार्थना

हाथ में फूल लेकर प्रार्थना करें।

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव।।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।।

अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम।

पुण्याहवाचनम्

यजमान ब्राह्मण के हाथ में जल, अक्षत, गन्ध, पुष्प, पान, दक्षिणा निम्न मन्त्रों के साथ दे और आशीर्वाद ग्रहण करे।

यजमान बोले—**शिवा आपः सन्तु।**

ब्राह्मण बोले—**सन्तु शिवा आपः।**

यजमान चन्दन दे—**सुगन्धाः पान्तु।**

ब्राह्मण बोले—**सौमङ्गल्यं चास्तु।**

यजमान अक्षत दे—**अक्षतं चारिष्टं चास्तु।**

ब्राह्मण बोले—**अस्त्वक्षतमरिष्टं च।**

यजमान पान दे—**सफलताम्बूलानि पान्तु।**

ब्राह्मण बोले—**ऐश्वर्यमस्तु।**

यजमान दक्षिणा दे—**दक्षिणाः पान्तु।**

ब्राह्मण बोले—**बहुदेयं चास्तु।**

यजमान जल दे—**ॐ स्वर्चितमस्तु।**

ब्राह्मण बोले—**अस्त्वर्चितं मङ्गलं च।**

यजमान बोले—**दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चायुष्यं चास्तु।**

ब्राह्मण बोलें—**अस्तु।**

पुनः यजमान बोले—**यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा ऋग्यजुः-सामाथर्वणाशीर्वचनं बह्वृषिमनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।**

ब्राह्मण बोले—**वाच्यताम्।**

यजमान—द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्रचतिष्ठत नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत। सविता त्वा सवानाꣳ सुवतामग्निर्गृहपतीनाꣳ सोमो वनस्पतीनाम्। बृहस्पतिर्वाच इन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्म्मपतीनाम्। न तद्रक्षाꣳसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजꣳ ह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायणꣳहिरण्यꣳस देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः। उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्याददे। उग्रꣳशर्म्म महि श्रवः।। उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे अभि देवाँऽइयक्षते।।

यजमान ब्राह्मणों से प्रार्थना करे—**व्रत-नियम-तपःस्वाध्याय-क्रतु-शम-दम-दानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्।**

ब्राह्मण—**समाहितमनसः स्मः।**

यजमान—**प्रसीदन्तु भवन्तः।**

ब्राह्मण—**प्रसन्नाः स्मः।**

यजमान अपने सम्मुख ताँबे के दो पात्र रखे या मिट्टी के सकोरे में निम्न मन्त्र से जल गिराये। प्रथम दाहिने पात्र में—

ॐ शान्तिरस्तु। पुष्टिरस्तु। वृद्धिरस्तु। ऋद्धिरस्तु। अविघ्नमस्तु। आयुष्यमस्तु। आरोग्यमस्तु। शिवमस्तु। शिवं कर्मास्तु। कर्मसमृद्धिरस्तु। धर्मसमृद्धिरस्तु। वेदसमृद्धिरस्तु। शास्त्रसमृद्धिरस्तु। धन-धान्य-समृद्धिरस्तु। पुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु। इष्टसम्पदस्तु। अरिष्टनिरसनमस्तु। यच्छ्रेयस्तदस्तु।

अब दूसरे पात्र में जल गिरावे—**यत्पापं रोगोऽशुभमकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।**

पुनः प्रथम पात्र में—ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। उत्तरोत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु। उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु। उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरणे सुमुहूर्ते सुग्रहे सुनक्षत्रे सुदैवते प्रीयन्ताम्। ॐ अग्निपुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगाः मातरः प्रीयन्ताम्। ॐ वशिष्ठपुरोगाः ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धतीपुरोगाः एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्।

पुनः दूसरे पात्र में—ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। शाम्यन्त्वीतयः।

पुनः प्रथमपात्र में—शुभानि वर्द्धन्ताम्। शिवा आपः सन्तु। शिवा ऋतवः सन्तु। शिवा अग्नयः सन्तु। शिवा आहुतयः सन्तु। शिवा

वनस्पतयः सन्तु। शिवा अतिथयः सन्तु। अहोरात्रे शिवे स्याताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु। फलवल्यो न ओषधयः पच्यन्ताम्। योगक्षेमो नः कल्पताम्। ॐ शुक्राङ्गारक-बुध-बृहस्पति-शनैश्चर-राहु-केतु-सोमसहितादित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान्नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। ॐ पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

प्रथम पात्र के जल से यजमान का सिञ्जन करे। दूसरे पात्र का जल बाहर पवित्र स्थान पर गिरा दें।

यजमान— **भो ब्राह्मणाः, मम सपरिवारस्य गृहे पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण— **ॐ पुण्याहम्। ॐ पुण्याहम्। ॐ पुण्याहम्।**

यजमान— **भो ब्राह्मणाः, मम सपरिवारस्य गृहे कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण— **ॐ कल्याणम्। ॐ कल्याणम्। ॐ कल्याणम्।**

यजमान— **भो ब्राह्मणाः, मम सपरिवारस्य गृहे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण— **ॐ स्वस्ति। ॐ स्वस्ति। ॐ स्वस्ति।**

यजमान— **भो ब्राह्मणाः, मम सपरिवारस्य गृहे श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।**

ब्राह्मण—**अस्तु श्रीः। अस्तु श्रीः। अस्तु श्रीः।**

आशीर्वाद

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥

सङ्कल्पः

पूर्वोच्चरितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः यजमानः अद्य पुण्याहवाचनकर्मणि साङ्गतासंसिद्ध्यर्थं पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो अमुकामुकगोत्रेभ्य इमां यथाशक्तिद्रव्यदक्षिणां विभज्य दातुमहम् उत्सृजे। कृतेनानेन पुण्याहवाचनेन प्रजापतिः प्रीयताम्। इति जलमुत्सृजेत्।

गौर्यादिषोडशमातृकापूजनम्

षोडशमातृकाचक्रम्

पूर्व

आत्मनः कुलदेवता १६	लोकमातरः १२	देवसेना ८	मेधा ४
तुष्टिः १५	मातरः ११	जया ७	शची ३
पुष्टिः १४	स्वाहा १०	विजया ६	पद्मा २
धृतिः १३	स्वधा ९	सावित्री ५	गौरी १ गणेश

यजमान मातृका वेदी पर रोली या हल्दी से सोलह कोष्ठक बनावे। सामने के प्रथम कोष्ठ में दो भाग करे। प्रत्येक कोष्ठ में सुपाड़ी रखे।

क्रमशः आवाहन करें—

१. ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि।
२. ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः पद्मामावाहयामि स्थापयामि।
३. ॐ भूर्भुवः स्वः शच्यै नमः शचीमावाहयामि स्थापयामि।
४. ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि।
५. ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि।
६. ॐ भूर्भुवः स्वः विजयायै नमः विजयामावाहयामि स्थापयामि।
७. ॐ भूर्भुवः स्वः जयायै नमः जयामावाहयामि स्थापयामि।
८. ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः देवसेनामावाहयामि स्थापयामि।
९. ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि स्थापयामि।
१०. ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

११. ॐ भूर्भुवः स्वः मातृभ्यो नमः मातृः आवाहयामि स्थापयामि।
१२. ॐ भूर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृः आवाहयामि स्थापयामि।
१३. ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि।
१४. ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।
१५. ॐ भूर्भुवः स्वः तुष्ट्यै नमः तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।
१६. ॐ भूर्भुवः स्वः कुलदेवतायै नमः आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

आवाहनम्

समवख्ये देव्या धिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा। मामऽआयुः प्रमोषीर्मोऽअहन्तवव्वीरं विव्वदे यतवदे विसन्दृशि।।

षोडशोपचार पूजन करें।

प्रार्थना

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश॥

सप्तघृतमातृकाचक्रम्

पूर्व

।। श्रीः ।।

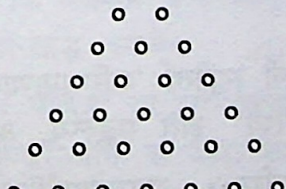

(वसोर्धारा)

सप्तघृतमातृकापूजनम्

पीढ़े पर सफेद कपड़ा लपेट कर कम से कम ६ रेखा में बिन्दुओं को रोली या सिन्दूर से अंकित करें। नीचे की रेखा के सात बिन्दुओं पर निम्न देवियों के नाम से आवाहन करें। घी, गुड़ या पेड़ा से बिन्दुओं को एकीकरण करें।

१. ॐ भूर्भुवः स्वः श्रियै नमः श्रियमावाहयामि स्थापयामि।
२. ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।
३. ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि।
४. ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि।
५. ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि स्थापयामि।
६. ॐ भूर्भुवः स्वः प्रज्ञायै नमः प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि।
७. ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि।

आवाहन

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्।

देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामधुक्षः।।

प्रार्थना

श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः।।

आयुष्यमन्त्रजपः

सङ्कल्पः

यजमानः—देशकालौ सङ्कीर्त्य 'करिष्यमाणान्नप्राशनकर्मणोऽमङ्गल-नाशार्थमायुष्यमन्त्रजपं करिष्ये'' इति सङ्कल्प्य, आयुष्यमन्त्रान् पठेत्।

ॐ आयुष्यं व्वर्चस्यꣳ रायस्पोषमौद्भिदम्।। इदꣳ हिरण्यं वर्च्चस्वजैत्राबाविशदातादु माम्।।१।।

ॐ न तद्रक्षाꣳसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजꣳ ह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायणः हिरण्यः स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः।।२।।

यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यꣳ शतानीकाय सुमनस्यमाना तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम्।।३।।

अश्वत्थामादि-ऋषयो वशिष्ठप्रमुखास्तथा।
मार्कण्डेयप्रभृतयः सर्वे सन्तु शिवार्चकाः॥१॥

जमदग्निः कश्यपश्च दीर्घमायुः करोतु मे।
अन्ये ऋषिगणा देवा इन्द्राद्याश्च सशक्तिकाः॥२॥

भूसुराः सुतपोनिष्ठाः सत्यव्रतपरायणाः।
दीर्घमायुः प्रयच्छन्तु सर्वकामस्य सिद्धये॥३॥

यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविनः।
ददुस्तेनायुषा सम्यग् जीवेम शरदः शतम्॥४॥

दीर्घा नागास्तथा नद्यः समुद्रा गिरयो दिशः।
अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम्॥५॥

सत्यानि पञ्च भूतानि विनाशरहितानि च।
अविनाश्यायुषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम्॥६॥

॥ इत्यायुष्यमन्त्रजपः॥

नान्दीश्राद्धप्रयोगः

आचार्य को चाहिए कि यजमान से घृतमातृका वेदी के सामने ही पत्तल, वस्त्रादि पर नान्दी-श्राद्ध करायें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

यजमान हाथ में जौ, कुशा, जल, द्रव्य लेकर संकल्प करे।

देशकालौ सङ्कीर्त्य **करिष्यमाणान्नप्राशनसंस्कारकर्मणि साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धं करिष्ये।**

यजमान तीन बार गायत्री मन्त्र का जप करे।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

ॐ अमुकगोत्राः मातृ-पितामहि-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद-प्रक्षालनं वृद्धिः।

ॐ अद्य पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। ॐ अमुकगोत्राः मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

यह कहकर सभी स्थानों पर कुश, यव, अक्षत और जल छोड़े।

आसनदानम्

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदमासनं वो नमः नान्दीश्राद्धेक्षणं क्रियेतां यथा प्राप्तवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवाम। ॐ अमुकगोत्राः मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदमासनं वो नमः। ॐ अमुकगोत्राः पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदमासनं वो नमः। ॐ अमुकगोत्राः मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदमासनं वो नमः।

गन्धादिदानम्

अत्रापः पान्तु (जलम्)। इमे वाससी सुवाससी (वस्त्रम्)। इमानि यज्ञोपवीतानि सुयज्ञोपवीतानि (यज्ञोपवीतम्)। अयं वो गन्धः सुगन्धः (चन्दनम्)। इमे अक्षताः स्वक्षताः (अक्षतान्)। इमानि पुष्पाणि सुपुष्पाणि

(पुष्पाणि)। अयं वो धूपः सुधूपः (धूपम्)। अयं वो दीपः सुदीपः (दीपम्)। इदं नैवेद्य सुनैवेद्यम् (नैवेद्यम्)। इमानि ऋतुफलानि सुऋतुफलानि (ऋतुफलम्)। इदं ताम्बूलं सुताम्बूलम् (ताम्बूलम्)। इदं पूगीफलं सुपूगीफलम् (पूगीफलम्)।

सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

भोजननिष्क्रयदानम्

सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं युग्म-ब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्य वृद्धिः। पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्प वृद्धिः। मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

सक्षीरयवमुदकदानम्

सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्। पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। इसके बाद 'अघोराः पितरः सन्तु' यह कहते हुए पूर्व की ओर से जलधारा दें।

देशकालौ सङ्कीर्त्य **करिष्यमाणान्नप्राशनसंस्कारकर्मणि साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धं करिष्ये।**

यजमान तीन बार गायत्री मन्त्र का जप करे।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

ॐ अमुकगोत्राः मातृ-पितामहि-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद-प्रक्षालनं वृद्धिः।

ॐ अद्य पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। ॐ अमुकगोत्राः मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

यह कहकर सभी स्थानों पर कुश, यव, अक्षत और जल छोड़े।

आसनदानम्

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदमासनं वो नमः नान्दीश्राद्धेक्षणं क्रियेतां यथा प्राप्तवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवाम। ॐ अमुकगोत्राः मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदमासनं वो नमः। ॐ अमुकगोत्राः पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदमासनं वो नमः। ॐ अमुकगोत्राः मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदमासनं वो नमः।

गन्धादिदानम्

अत्रापः पान्तु (जलम्)। इमे वाससी सुवाससी (वस्त्रम्)। इमानि यज्ञोपवीतानि सुयज्ञोपवीतानि (यज्ञोपवीतम्)। अयं वो गन्धः सुगन्धः (चन्दनम्)। इमे अक्षताः स्वक्षताः (अक्षतान्)। इमानि पुष्पाणि सुपुष्पाणि

(पुष्पाणि)। अयं वो धूपः सुधूपः (धूपम्)। अयं वो दीपः सुदीपः (दीपम्)। इदं नैवेद्य सुनैवेद्यम् (नैवेद्यम्)। इमानि ऋतुफलानि सुऋतुफलानि (ऋतुफलम्)। इदं ताम्बूलं सुताम्बूलम् (ताम्बूलम्)। इदं पूगीफलं सुपूगीफलम् (पूगीफलम्)।

सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

भोजननिष्क्रयदानम्

सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं युग्म-ब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

सक्षीरयवमुदकदानम्

सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्। पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। इसके बाद 'अघोराः पितरः सन्तु' यह कहते हुए पूर्व की ओर से जलधारा दें।

प्रार्थना—

ॐ गोत्रं नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च।

श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहु देयं च नोऽस्तु।

अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि।

याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन।

एता सत्याशिषः सन्तु। सन्त्वेताः सत्या आशिषः।

दक्षिणादानम्

ॐ अद्य सत्यवसुसंज्ञकानां विश्वेदेवानां नान्दीमुखानां कृतस्याभ्युदयिकस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं यथापरिमितं दक्षिणा-द्रव्यं यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे। एवं मातृ-पितामहादीनां च पृथक्-पृथक् दक्षिणां दद्यात्।

(एक पात्र में जल लेकर उसे पूजास्थान पर मन्त्र द्वारा देवें)

ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभिदेवाँऽइयक्षते।

ॐ इडामग्ने पुरुदꣳ सꣳ सनिं गोः शाश्वतमꣳ हवमानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे।।

अनेनाभ्युदयिकन्दीश्राद्धं सम्पन्नम्। सुसम्पन्नम्। तेन श्राद्धकर्माङ्गदेवताः प्रीयन्तां विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्।

पश्चात् प्रार्थना करें।

माता पितामहीश्चैव तथैव प्रपितामहीः।

पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः॥

मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकादयः।

एते भवन्तु सुप्रीताः प्रयच्छन्तु च सुमङ्गलम्॥

अनेनाभ्युदयिकनान्दीश्राद्धकर्मणा सविता प्रीयताम्।

विसर्जनम्

ॐ वाजे वाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृताऽऋतज्ञाः।
अस्य मद्ध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः॥

अनुव्रजनम्

ॐ आमा वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे।
आमा गन्तां पितरा मातरा च मा सोमोऽअमृतत्वेन गम्यात्॥

पुष्प लेकर प्रार्थना करे।

विश्वेदेवाः प्रीयन्तामिति।

यजमानः—मयाऽऽचरितेऽस्मिन् साङ्कल्पिकाभ्युदयिकनान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनाच्छ्रीगणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।

ब्राह्मणः—अस्तु परिपूर्णः।

अनेन साङ्कल्पिकनान्दीश्राद्धेन नान्दीमुखाः पितरः प्रीयन्ताम्।

ॐ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

अग्निस्थापन के लिए पञ्चभूसंस्कार करे।

पञ्चभूसंस्कारः

हस्तपरिमितचतुरस्रां भूमिं कुशैः परिसमूह्य तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमूलेनोल्लिख्य उल्लेखनक्रमेणाऽनामिकाऽङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य जलेनाऽभ्युक्ष्य अग्निमुपसमाधाय, वेद्यामग्निं स्थापयेत्। ततो माता कुमारमादायाऽग्नेः पश्चाद् उत्तरतो वा उपविशेत्।

प्रयोगः

शुभ मुहूर्त में गणेशादि पञ्चाङ्ग-पूजन एवं अग्नि-संस्कार कर निम्न मन्त्र से चरु पकावें—

ॐ प्राणाय त्वा जुष्टं प्रोक्ष्यामि।।१।।
ॐ अपानाय त्वा जुष्टं प्रोक्ष्यामि।।२।।
ॐ चक्षुषे त्वा जुष्टं प्रोक्ष्यामि।।३।।
ॐ श्रोत्राय त्वा जुष्टं प्रोक्ष्यामि।।४।।
ॐ अग्नये स्विष्टकृते त्वा जुष्टं प्रोक्ष्यामि।।५।।

इस प्रकार पकते हुए चावल में थोड़ा घी भी डाल दें तथा पके हुए स्थालीपाक (चरु) को निम्न पाँच मन्त्रों से होमस्थाली में रखें (यजमान तथा ऋत्विजों के लिए)—

ॐ प्राणाय त्वा जुष्टं निर्वपामि।।१।।
ॐ अपानाय त्वा जुष्टं निर्वपामि।२।।
ॐ चक्षुषे त्वा जुष्टं निर्वपामि।।३।।
ॐ श्रोत्राय त्वा जुष्टं निर्वपामि।।४।।
ॐ अग्नये स्विष्टकृते त्वा जुष्टं निर्वपामि।।५।।

पुनः ब्रह्मोपवेशनाद्याज्यभागान्तं कर्म कुर्यात् (ब्रह्मोपवेशनादि आज्यभागान्त कर्म करें)—

ब्रह्मवरणम्

आचार्यः (पिता वा) हस्ते जलमादाय, **'देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्मा सपत्नीकोऽहम् अस्य कुमारस्य अन्नप्राशनकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे'**। ब्रह्माऽपि **'वृतोऽस्मि'** इति वदेत्।

कुशकण्डिका

अग्नेर्दक्षिणतः शुद्धमासनं दत्वा अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। **यावत्कर्म समाप्यते तावत् त्वं ब्रह्मा भव। 'भवामि'** इति प्रतिवचनम्। प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा, वारिणा परिपूर्य, कुशैराच्छाद्य, प्रथमासने निधाय, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य, द्वितीयासने

निदध्यात्। कुशैः परिस्तरणं कुर्यात्। तद्यथा—आग्नेयादीशानान्तम्। ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्। नैर्ऋत्याद् वायव्यान्तम्। अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्।

पात्रासादनम्—त्रयः कुशाः। पवित्रार्थं कुशद्वयम्। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। सम्मार्जनकुशाः पञ्च। उपयमनकुशाः सप्त। समिधस्तिस्रः। स्रुवः। आज्यम्। तण्डुलपूरितपूर्णपात्रम्। वृषनिष्क्रयदक्षिणा।

ततः पवित्रकरणं कुर्यात्। तद्यथा—द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय, द्वौ मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य त्रिभिश्छिद्य। द्वौ ग्राह्यौ। त्रिस्त्याज्यः। सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिवारं प्रोक्षणीपात्रे निधाय। अनामिकाऽङ्गुष्ठाभ्यां गृहीत-पवित्राभ्यां त्रिरुत्पवनम्। प्रोक्षण्या सव्यहस्तकरणम्। दक्षिणेनोद्दिङ्नम्। प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम्। प्रोक्षणीजलेनाऽऽसादितवस्तुप्रोक्षणम्। अग्नि-प्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीर्निधाय।

आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। अधिश्रयणम्। ज्वलदुल्मुकेन पर्यग्निकरणम्। इतरथावृत्तिः। स्रुवप्रतपनम्। सम्मार्जनकुशैः स्रुवसम्मार्जनम्। अग्नेरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः। स्रुवं सम्मार्ज्य। प्रणीतोदकेनाऽभ्युक्ष्य। पुनः प्रतप्य। दक्षिणदेशे निधाय।

आज्यमग्नेरवतार्य। प्रणीतापश्चिमतो निधाय, अनामिकाऽङ्गुष्ठाभ्यां गृहीतपवित्राभ्यां प्रोक्षणीवदुत्पवनम्। आज्याऽवेक्षणम्। अपद्रव्यनिरसनम्। पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम्। आज्यमग्नेः पश्चिमतो निधाय।

उपयमनकुशान् वामहस्तेनादाय। उत्तिष्ठन् दक्षिणहस्ते तिस्रः समिधोऽभ्याधाय। प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा, तूष्णीं घृताक्ताः समिधस्तिस्रः, अग्नौ क्षिपेत्। उपविश्य, सपवित्रकरेण प्रोक्षण्युदकेन ईशानादारभ्य ईशानपर्यन्तमग्निं जलेन पर्युक्ष्य पवित्रे प्रणीतापात्रे निधाय। दक्षिणं जान्वाच्य। ब्रह्मणान्वारब्धः आघाराज्यभागौ जुहुयात्। तद्यथा—

आघार-आज्यभागसंज्ञकहोमः

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।।१।। इत्युच्चार्य स्रुवावस्थितहुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः। एवं सर्वत्र स्वाहान्ते त्यागः।

ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय न मम।।२।। ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम।।३।। ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम।।४।।

नीचे लिखे मन्त्रों से दो बार चरु एवं घृताहुतियाँ डालें—

देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु स्वाहा[1]।। इदं वाचे इदन्न मम।।१।।

वाजो नोऽअद्य प्रसुवति दानं वाजो देवाँ ऋतुभिः कल्पयति। वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वाऽ आशा वाजपतिर्जयेय ꣳ स्वाहा[2]। इदं वाचे वाजाय इदन्न मम।।२।।

उसके बाद स्थालीपाक (चरु) के द्वारा चार आहुतियाँ दें—

१. ॐ प्राणेनान्नमशीय स्वाहा। इदं प्राणाय इदन्न मम।।१।।

२. ॐ अपानेन गन्धानशीय स्वाहा। इदमपानाय इदन्न मम।।२।।

३. ॐ चक्षुषा रूपाण्यशीय स्वाहा। इदं चक्षुषे इदन्न मम।।३।।

४. ॐ श्रोत्रेण यशोऽयशीय स्वाहा। इदं श्रोत्राय इदन्न मम।।४।।

भूरादिनवाहुतयः

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम।।५।।

ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम।।६।। ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।।७।। ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽ-अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।।८।। ॐ स त्वन्नोऽअग्ने वमो भवोती नेदिष्ठोऽअस्या ऽउषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणꣳ रराणो व्रीहिः मृडीकꣳ सुहवो न ऽएधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।।९।। ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽअसि। अयानो यज्ञं

---

१. ऋग्वेद-८।१००।११।

२. यजु. १८।३३।

वहास्ययानो धेहि भेषजꣳ स्वाहा। इदमग्नये अयसे न मम।।१०।। ॐ ये ते शतं वरुणसहस्रं यज्ञिया: पाशा विततता महान्त:। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुत: स्वर्का: स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्य: स्वर्केभ्यश्च न मम।।११।। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳश्रथाय। अथा वयमादित्यव्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायाऽऽदित्यायाऽदितये न मम।।१२।। ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।।१३।। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।।१४।।

तत: संस्रवप्राशनम्। आचमनम्। पवित्राभ्यां प्रणीतोदकेन—'ॐसुमित्रिया नऽआप: ओषधय: सन्तु' इति मार्जनम्। अग्नौ पवित्र-प्रतिपत्ति:।

ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्

हस्ते जलमादाय **अद्य कृतस्य अन्नप्राशनकर्मणोऽङ्गभूतं विहित-मिदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे।** इत्युक्त्वा भूमौ जलं क्षिपेत्। ब्रह्माऽपि—**ॐद्यौस्त्वा ददातु पृथ्वी त्वा प्रतिगृह्णातु।** इति वदेत्। अग्ने: पश्चात्, ऐशान्यां वा प्रणीताजलं **ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्म:।** इत्युच्चार्य भूमौ विमोचयेत्। उपयमन-कुशै:—**ॐ आप: शिवा: शिवतमा: शान्ता: शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।** इति मन्त्रमुच्चार्य मार्जयेत्। उपयमनकुशानामग्नौ प्रक्षेप:।

संस्रवप्राशन के बाद सभी रसों (भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य) सभी प्रकार के अन्नों को एक पात्र में रखकर दधि, मधु और घृत त्रिगुण करके निम्न मन्त्र से बालक को प्राशन कराये।

१. **ॐ भूस्त्वयि दधामि।**
२. **ॐ भुवस्त्वयि दधामि।**
३. **ॐ स्वस्त्वयि दधामि।**

ॐ अपां त्वौषधीनाꣳ रसं प्राशयामि शिवास्त आप ओषधय: सन्त्वमीवास्त आप ओषधयो भवन्तु। यह कहकर बचे हुए दधि, मधु,

घृत को पायस (खीर) में मिलाकर मङ्गल शब्द करते हुए सोने या चाँदी के चम्मच से बालक को कई बार खिलाये। अथवा मधु, दधि, घृत मिश्रित अन्न का प्राशन कराना चाहिए। यह प्राशन (खिलाने का कार्य) केवल 'हन्तकारं मनुष्याः' यह कहकर या अमन्त्रक (चुपचाप) करें। अन्नप्राशन में पारस्करगृह्यसूत्र के अनुसार बालक को तेजस्वी होने के लिए अनेक प्रकार के भक्ष्य पदार्थ खिलाने का विधान है[१]।

इसके बाद बालक का मुख धोकर उसे भूमि पर बैठाकर उसके सामने अस्त्र-शस्त्र, पुस्तक, कलम आदि कला की सामग्री रखे। अपनी इच्छा से बालक जिसे स्पर्श करे, वही उसकी जीविका का साधन होगा, यह परीक्षा करनी चाहिए। उपरोक्त सभी विधि बिना मन्त्र के होमरहित बालिका के अन्नप्राशन में भी करनी चाहिए।

अन्नप्राशन के बाद दक्षिणा-संकल्प, भोजन का संकल्प करें—**'कृतस्य अन्नप्राशनकर्मणः समृद्ध्यर्थं ब्राह्मणमेकं भोजयिष्ये'**। एक ब्राह्मण को भोजन करावें। पुनः संकल्प—**'कृतस्य अन्नप्राशनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थञ्च अमुकामुकगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसीदक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे'**। इसके बाद विसर्जन करे।

विसर्जनम्

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥

अन्त में विष्णु का ध्यान करते हुए बोले—

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

॥ॐ विष्णवे नमः।ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

॥ इत्यन्नप्राशनसंस्कारविधिः॥

१. पा.गृ.सू. १।१९।

अन्नप्राशन-पूजनसामग्री

रोली—१०० ग्राम
मौली—१०० ग्राम
हल्दी—१०० ग्राम
अबीर—१०० ग्राम
सिन्दूर—१०० ग्राम
माचिस—१
बुक्का—१०० ग्राम
अगरबत्ती—२ पैकेट
चन्दन—१
अक्षत—२०० ग्राम
सर्वौषधि—१
सुपाड़ी—३०
पान का पत्ता—१०
लौंग—१०० ग्राम
इलायची—१०० ग्राम
इत्र—१
रूई—५० ग्राम
गुलाबजल—१
गंगाजल—१ किलो
पञ्चरत्न—१
गरीगोला—२
पञ्चमेवा—२५० ग्राम
मीठा—१ किलो
पलाश-पत्तल—१०
चीनी—५०० ग्राम
फल—१ किलो
सप्तधान्य—५०० ग्राम
सप्तमृतिका—५०० ग्राम
पञ्चपल्लव

पञ्चामृत
दूध—५०० ग्राम
दही—५०० ग्राम
घी—१ किलो
मधु—१ शीशी
कलश—२
ढक्कन—२
सफेद कपड़ा—१ मीटर
लाल कपड़ा—१ मीटर
कुश
दूर्वा
पुष्प
पुष्पमाला—१०
बिल्वपत्र
तुलसीपत्र
धोती—६
साड़ी—२
वरणसामग्री-सभी वस्त्र, जनेऊ, पादुका, दक्षिणादि
कुशकण्डिका सामग्री
लकड़ी का पीढ़ा—३
सूखी लकड़ी (पलाश या आम्र) २ किलो
थाली—३
पञ्चपात्र—१
चावल—२ किलो
कसोरा—१०
दीपक—३०
पूर्णपात्र—१
ओदन (भात)

पारिभाषिक-शब्दार्थ-सूची

पद		अर्थ
अक्षत	=	हल्दीयुक्त चावल
अङ्क	=	गोद
अनडुह	=	बैल (बछड़ा)
अन्वारब्ध	=	कुश से सम्पर्क करके
अपद्रव्य	=	घास, खर आदि पदार्थों का निकालना
अर्घ्य	=	स्वागत में प्रस्तुत जल, अक्षत, द्रव्य, गन्ध, दूर्वा, पुष्पादि।
अभ्युक्षण	=	ठीक से देखना
अविघ्न	=	विघ्न न हो
आज्य	=	पिघला हुआ घी
आज्यनिर्वाप	=	पिघले हुए घी को डालना
आज्यावेक्षण	=	पिघले हुए घी को ठीक से देखना
आदाय	=	लेकर
आदौ	=	पहले
आप	=	जल
आयुष्य	=	आयु वाला
आवाहन	=	बुलाना (तत्तद्देवता के मन्त्र द्वारा)
इतरथावृत्ति	=	प्रारम्भिक स्थान से पुन: उस स्थान तक आने की क्रिया
इति	=	समाप्त
इष्ट	=	(ईप्सित) इच्छा
उच्चार्य	=	बोलकर
उत्तरत:	=	उत्तर से
उत्पवन	=	ऊपर उछालना

उदक	=	जल
उदधौ	=	समुद्र में
उद्दिङ्गन	=	ऊपर उछालना
उपयमनकुशा	=	सात कुशाओं का समूह
उपविश्य	=	बैठकर
उष्णोदक	=	गर्म जल
ऋतवः	=	ऋतुयें (मौसम)
करिष्ये	=	करता हूँ (आत्मनेपद) अपने लिए
करोद्वर्तन	=	कस्तूर्यादिमिश्रित चन्दन
कर्मणि	=	कर्म में
कुशा	=	एक घासविशेष, जो पूजा में प्रयुक्त होता है
क्षिपेत्	=	छोड़ दे (डाले)
गङ्गोदक	=	गंगाजल
गृहीत्वा	=	ग्रहण करके
घृताक्त	=	घी से युक्त
जननी	=	माता
जानु	=	जंघा
ज्वलदुल्मुक	=	जलती हुई लकड़ी
तूष्णीम्	=	चुपचाप
त्राहि माम्	=	मेरी रक्षा करें
त्रिराचम्य	=	तीन बार आचमन करके
देहि	=	दो
द्वादश	=	बारह (१२)
धारणम्	=	धारण करना
निधाय	=	रखकर
पञ्चरत्न	=	सोना, हीरा, मोती, नीलम और पद्मराग
परिस्तरण	=	कुश को वेदी के चारों ओर बिछाना

पूर्णपात्र	=	ब्रह्मा के लिए चावल से भरा पात्रविशेष
प्रतिष्ठा	=	स्थापना
प्राङ्मुख	=	पूरब की ओर मुख करके
प्रोक्षणी	=	एक पात्र, जिसके जल से शुद्ध किया जाता है
बलमस्तु	=	बल होवे
मनसा	=	मन से
मा च याचिष्म	=	मैं कभी याचना न करूँ
मातामही	=	नानी (माता की माता)
मार्जन	=	शुद्ध करना (झाड़ना)
लभेमहि	=	प्राप्त होवे
लोपे	=	लोप होने पर)
वाचयिष्ये	=	बोलें
शिवमस्तु	=	कल्याण हो
शीर्ष	=	ऊपर (शिर पर)
सप्तमृत्तिका	=	सात जगह की मिट्टी—हाथी, घोड़ा, दीमक, संगम, राजद्वार, तालाब, गोशाला।
समिधा	=	सूखी लकड़ी
सम्मार्जन कुशा	=	पाँच कुशाओं का समूह
सर्वौषधि	=	मुरा, मासी, जटा, वच, कुष्ट, शिलाजीत, दारु आदि पदार्थ का मिश्रण।
संस्कार	=	शुद्ध करना
संस्रव-प्राशन	=	आहुति-शेषांश का भक्षण (जो प्रोक्षणी में रखा हुआ है)
हस्तपरिमित	=	हाथ भर (१८ इंच)

●

सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्वविद्यालयः
श्रुतम् मे गोपाय